TE TIRA ĀRAI URUTĀ

NZ ROYAL COMMISSION
COVID-19 LESSONS LEARNED

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों की जांच के लिए रॉयल कमीशन – सार्वजनिक सुनवाईयां

यह दस्तावेज़ कोविड-19 से लिए गए अनुभवों पर रॉयल जांच कमीशन के काम पर एक अद्यतन जानकारी प्रदान करता है और जुलाई 2025 में जांच दल द्वारा आयोजित सार्वजनिक सुनवाईयों का सारांश प्रदान करता है।

परिचय

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों के लिए गठित रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी क्या है?

कोविड-19 से लिए गए अनुभवों की जांच के लिए रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी (जांच) की स्थापना 2022 में न्यूज़ीलैंड सरकार द्वारा एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड के कोविड-19 अनुभव की समीक्षा करने के लिए की गई थी ताकि देश भविष्य की महामारियों के लिए अधिक तैयार हो सके।

जांच में सार्वजनिक रूप से उपलब्ध जानकारी, प्रमुख निर्णयकर्ताओं से एकत्रित साक्ष्य, तथा एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की महामारी के प्रति प्रतिक्रिया से प्रभावित लोगों से प्राप्त जानकारी का उपयोग किया गया है, ताकि महामारी के प्रति हमारे देश की प्रतिक्रिया की समीक्षा की जा सके। इसके बाद हम सरकार को सिफारिशें देते हैं कि एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड भविष्य की महामारी के लिए कैसे तैयार हो सकता है और उसका जवाब कैसे दे सकता है।

रॉयल कमीशन ऑफ इन्क्वायरी का उद्देश्य सार्वजनिक महत्व के मामलों की समीक्षा करना है। यह जांच सरकार से स्वतंत्र होने के लिए स्थापित की गई है।

जांच ने 2023 और 2024 में एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की कोविड-19 प्रतिक्रिया के कई क्षेत्रों की समीक्षा की, और एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसे आप हमारी वेबसाइट https://www.covid19lessons.royalcommission.nz/reports-lessons-learned/(संक्षिप्त URL: https://tinyurl.com/2hhm88kw) पर पढ़ सकते हैं। जांच के इस भाग को चरण एक कहा गया।

2024 के अंत में, सरकार ने हमसे कुछ नए विषयों की समीक्षा करने को कहा, तथा उन कुछ विषयों पर अधिक विस्तार से विचार करने को कहा जिनकी हम पहले से ही जांच कर रहे थे। जांच के इस

भाग को चरण दो कहा जाता है। विभिन्न विषयों पर विचार करने के साथ-साथ, जांच के इस चरण का नेतृत्व विभिन्न क्षेत्रों में विशेषज्ञता रखने वाले विभिन्न लोगों द्वारा किया जाता है।

हम 26 फरवरी 2026 तक इन विषयों पर एक और रिपोर्ट तैयार करेंगे।

जांच में किन विषयों पर विचार किया जा रहा है?

जांच वर्तमान में 2021 और 2022 के दौरान निम्नलिखित विषयों पर न्यूज़ीलैंड सरकार द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों पर विचार कर रही है:

- टीके, जिनमें टीकाकरण संबंधी अनिवार्यताएं, कोविड-19 टीके की मंजूरी और टीका सुरक्षा (प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं की निगरानी और रिपोर्टिंग सहित) शामिल हैं। प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं वे हानिकारक प्रभाव हैं जो किसी दवा या टीके के कारण होने का संदेह है।
- लॉकडाउन, विशेष रूप से 2021 के अंत में राष्ट्रीय लॉकडाउन और 2021 के अंत और 2022 की शुरुआत में ऑकलैंड और नॉर्थलैंड लॉकडाउन।
- परीक्षण, अनुरेखण, और सार्वजनिक स्वास्थ्य सामग्री – जैसे RAT परीक्षण या मास्क।

महत्वपूर्ण निर्णय वह निर्णय होता है जो सरकार द्वारा लिया गया हो तथा जिसका प्रभाव बड़ी संख्या में लोगों पर पड़ा हो या जिसकी क्षेत्रीय या राष्ट्रीय (या दोनों) स्तर पर बड़ी लागत आई हो।

जांच इन क्षेत्रों में सरकार द्वारा लिए गए प्रमुख निर्णयों की समीक्षा करेगी और इस बारे में सिफारिशें प्रदान करेगी कि एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड भविष्य की महामारी के दौरान कैसे निर्णय ले सकता है, साथ ही हम भविष्य की महामारी के लिए अधिक व्यापक रूप से कैसे तैयारी कर सकते हैं।

अब तक जांच में क्या हुआ है?

जांच दल दूसरी रिपोर्ट पर काम कर रहा है, जो 26 फरवरी 2026 तक प्रस्तुत की जानी है।

अभी तक की जांच में:

- न्यूज़ीलैंड की जनता से प्रस्तुतियाँ एकत्रित की गईं। जांच दल ने 31,000 से अधिक लोगों, सामुदायिक समूहों और संगठनों से बात की, जिन्होंने एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में कोविड-19 महामारी के अपने अनुभव साझा किए।
- महामारी के दौरान महत्वपूर्ण निर्णय लेने में शामिल सरकारी अधिकारियों, मंत्रियों और अन्य लोगों से मुलाकात की।
- न्यूज़ीलैंड के विभिन्न समुदायों ने महामारी का अनुभव किस प्रकार किया, इस बारे में जानने के लिए सामुदायिक समूहों, व्यवसायों और संगठनों से मुलाकात की।
- सरकारी संगठनों और अन्य हितधारकों से महामारी और उस पर न्यूज़ीलैंड सरकार की प्रतिक्रिया के बारे में लिखित जानकारी एकत्र की गई।
- सामुदायिक समूहों, संगठनों और विशेषज्ञों से महामारी के बारे में उनके अनुभव जानने के लिए एक सप्ताह तक सार्वजनिक सुनवाई आयोजित की गई।

सार्वजनिक सुनवाई

जांच दल ने सार्वजनिक सुनवाई क्यों आयोजित की?

जांच दल ने यह पता लगाने के लिए सार्वजनिक सुनवाई की कि विभिन्न लोगों और समूहों ने एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में महामारी का अनुभव किस प्रकार किया।

सुनवाई से जनता को न्यूज़ीलैंड में कोविड-19 महामारी के बारे में जांच द्वारा एकत्रित की जा रही जानकारी के बारे में अधिक जानने का अवसर मिला।

जांच दल ने तमाकी मकौरौ ऑकलैंड में सुनवाई की। ऐसा इसलिए है क्योंकि हमें विशेष रूप से तामाकी मकौरौ ऑकलैंड और ते ताई टोकेरौ नॉर्थलैंड पर लॉकडाउन के प्रभाव को देखने के लिए कहा गया था और हम उन क्षेत्रों में रहने वाले विभिन्न लोगों से सुनना चाहते थे।

सार्वजनिक सुनवाई के दौरान क्या हुआ?

सार्वजनिक सुनवाई के दौरान, जांच दल ने विभिन्न संगठनों, सामुदायिक समूहों और विशेषज्ञों से कोविड-19 महामारी के बारे में सुना और यह भी जाना कि सरकार ने न्यूज़ीलैंड में महामारी के प्रति कैसी प्रतिक्रिया दी।

उपस्थित गवाहों से न्यूज़ीलैंड में कोविड-19 महामारी के उनके अनुभवों के बारे में प्रश्न पूछे गए। उनसे विशेष रूप से टीका सुरक्षा, टीके संबंधी अनिवार्यता और लॉकडाउन के बारे में पूछा गया।

जांच दल ने सुनवाई में ऐसे लोगों को बोलने के लिए कहा जो इन विषयों पर कई तरह के अनुभव और दृष्टिकोण साझा कर सकें।

सुनवाई में बोलने वाले लोगों की पूरी सूची, साथ ही उपशीर्षक के साथ प्रत्येक सत्र की रिकॉर्डिंग हमारी वेबसाइट पर उपलब्ध है: https://www.covid19lessons.royalcommission.nz/the-inquiry/public-hearings/public-hearings-session-one-perspectives-on-the-pandemic (संक्षिप्त URL: https://tinyurl.com/2snbfm45)।

सार्वजनिक सुनवाई: पहला दिन

तामाकी मकौरौ ऑकलैंड व्यापार समुदाय के दृष्टिकोण

जांच दल ने हार्ट ऑफ द सिटी, नियोक्ता एवं निर्माता एसोसिएशन, तथा व्हारिकी बिजनेस नेटवर्क की बात सुनी।

हार्ट ऑफ द सिटी ऑकलैंड के सिटी सेंटर का व्यावसायिक संघ है। उनका लक्ष्य ऑकलैंड सेंट्रल को व्यवसायों के लिए सफल और सहायक बनाना है।

नियोक्ता एवं निर्माता संघ न्यूज़ीलैंड का सबसे बड़ा व्यावसायिक संघ है, जो पूरे देश में व्यवसायों को सफल होने में सहायता करता है।

व्हारिकी बिजनेस नेटवर्क एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में माओरी व्यवसायों और पेशेवरों का समर्थन करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- 2021 में विस्तारित ऑकलैंड लॉकडाउन ने उन व्यवसायों के लिए बहुत अधिक आर्थिक और भावनात्मक तनाव पैदा किया, जो पहले से ही महामारी के दौरान महत्वपूर्ण तनाव का सामना कर रहे थे। यद्यपि वेतन सब्सिडी जैसी सरकारी पहल मददगार थीं, लेकिन महामारी के प्रभाव 2025 में भी महसूस किए जा सकते हैं।
- व्यवसायों के प्रबंधन और कार्यान्वयन के लिए सरकारी आदेश जटिल थे, जिसके कारण कर्मचारियों और ग्राहकों के लिए चुनौतियां उत्पन्न हो रही थीं।
- मिश्रित संदेशों और गलत सूचनाओं के कारण भ्रम और कठिनाइयाँ पैदा हुईं, हालाँकि व्यापार, नवाचार और रोजगार मंत्रालय ने एक हॉटलाइन प्रदान की जिससे मदद मिली।
- बेघर होने जैसे सामाजिक मुद्दे, मध्य ऑकलैंड में रहने और काम करने वाले लोगों और व्यवसायों पर और अधिक दबाव डालते हैं। अधिक दृश्यमान पुलिस और स्वास्थ्य सेवाएं महामारी के दौर से उबरने में मदद कर सकती थीं।
- जबकि माओरी समुदाय को महत्वपूर्ण समर्थन मिला, माओरी व्यवसायों को उतना समर्थन नहीं मिला। हालाँकि, व्यवसायों ने एक-दूसरे का समर्थन करने के लिए मिलकर काम किया।
- महामारी काल के दौरान नस्लवाद बढ़ गया।

भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी में मदद के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- व्यवसायों को शुरू से ही महामारी की योजना बनाने में शामिल किया जाना चाहिए।
- व्यवसाय, सरकारी एजेंसियां और समुदाय महामारी के दौरान बनाए गए संबंधों को बनाए रखते हैं ताकि एक साथ बेहतर ढंग से काम कर सकें।
- विभिन्न आवश्यकताओं वाले स्थानों के लिए लक्षित महामारी सहायता और प्रतिक्रियाएं तैयार करना।
- विभिन्न समुदायों के लिए काम करने वाली स्पष्ट और सुलभ जानकारी प्रदान करना।

ते ताई टोकेरौ नॉर्थलैंड व्यापार समुदाय के दृष्टिकोण

जांच दल ने नॉर्थचैंबर की बात सुनी।

नॉर्थचैंबर नॉर्थलैंड चैंबर ऑफ कॉमर्स है, जो ते ताई टोकेरौ नॉर्थलैंड में व्यवसायों की वकालत करता है और उनका विकास करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- सरकार द्वारा प्रदान की गई वित्तीय सहायता सभी व्यावसायिक लागतों को कवर करने के लिए पर्याप्त नहीं थी, खासकर लॉकडाउन के दौरान।
- व्यवसायों को टीकाकरण अनिवार्यता पसंद नहीं आई, क्योंकि उन्हें लगा कि सरकार को उन पर भरोसा नहीं है कि वे सही काम करेंगे और महामारी का प्रबंधन स्वयं करेंगे।
- स्थानीय व्यवसायों को लगा कि सरकार के निर्णयकर्ताओं द्वारा उनकी उपेक्षा की जा रही है, क्योंकि उन्हें लगा कि सरकार द्वारा लिए गए कई निर्णयों को लागू करना कठिन था।
- उन्हें ऑकलैंड में लंबे समय तक लॉकडाउन रहने के कारण भी अनोखी चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जिसने नॉर्थलैंड को देश के बाकी हिस्सों से काट दिया।
- स्थानीय व्यवसाय अभी भी महामारी के प्रभावों को महसूस कर रहे हैं।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- विभिन्न क्षेत्रों के साथ सहयोग करके ऐसे महामारी प्रतिक्रिया निर्णय लेना जो प्रत्येक क्षेत्र के अनुकूल हों, या ऐसे तरीके खोजना जिनसे विभिन्न क्षेत्र अपने व्यवसाय संचालित करते हुए भी सार्वजनिक स्वास्थ्य निर्णयों का पालन कर सकें।
- सभी को एक आदेश का पालन करने के लिए बाध्य करने के बजाय लोगों के साथ संवाद स्थापित करना।
- स्थानीय क्षेत्रों से फीडबैक एकत्रित करना कि सरकार के निर्णय उनके लिए किस प्रकार कारगर साबित हो रहे हैं।

वाइकाटो और वेटाहा कैंटरबरी व्यवसायों के दृष्टिकोण

जांच दल ने न्यूज़ीलैंड नेशनल फील्डेज़ सोसायटी और विलोबैंक वन्यजीव रिजर्व से भी जानकारी ली।

न्यूज़ीलैंड नेशनल फील्डेज़ सोसाइटी एक गैर-लाभकारी संगठन है जो एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में कृषि की उन्नति का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध है।

विलोबैंक वन्यजीव रिजर्व ओटाउताही क्राइस्टचर्च में स्थित एक न्यूजीलैंड थीम पर आधारित वन्यजीव पार्क है, जो वन्यजीव अनुसंधान और संरक्षण परियोजनाएं भी संचालित करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- कार्यक्रम आयोजकों को स्थगित या रद्द किए गए कार्यक्रमों के कारण वित्तीय चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- महामारी नियमों में लगातार बदलाव के कारण कार्यक्रम योजनाकारों के लिए अनिश्चितता पैदा हो गई।
- आयोजन योजनाकारों के लिए अधिदेश कठिन थे, क्योंकि उन्हें आयोजनों को ध्यान में रखकर नहीं बनाया गया था।
- विलोबैंक जैसे व्यवसायों के लिए पर्यटन की कमी एक बड़ी चुनौती थी, ऑकलैंड लॉकडाउन का स्थानीय पर्यटन पर बड़ा प्रभाव पड़ा।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- नियम बनाते समय सरकार विशिष्ट उद्योग आवश्यकताओं पर विचार करती है।
- लॉकडाउन के बाद पुनः खोलने के लिए स्पष्ट, सुसंगत मार्ग प्रदान करना।
- ग्राहकों और प्रदर्शकों को यह निर्णय लेने का अवसर दिया जाएगा कि वे आयोजनों को आगे बढ़ाना चाहते हैं या नहीं।

सार्वजनिक सुनवाई: दूसरा दिन

लॉकडाउन के सामाजिक प्रभाव पर शोध के दृष्टिकोण

जांच दल ने केयर एंड रिस्पॉन्सिबिलिटी अंडर लॉकडाउन (CARUL) रिसर्च कलेक्टिव की भी बात सुनी।

CARUL सामाजिक विज्ञान विशेषज्ञों का एक अंतरराष्ट्रीय समूह है जो यह जांच करता है कि सामाजिक समूहों और संस्थानों ने कोविड-19 महामारी द्वारा उत्पन्न विभिन्न चुनौतियों पर कैसे प्रतिक्रिया दी और यह अभी भी जारी है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- उनके शोध से पता चला कि महामारी की शुरुआत में लोगों ने लॉकडाउन का समर्थन किया था, लेकिन जैसे-जैसे समय बीतता गया, लोगों को प्रतिबंधों के तहत रहने में संघर्ष करना पड़ा।
- लॉकडाउन के प्रति समर्थन तब अधिक था जब लोगों को यह समझ में आया कि इससे कमजोर लोगों की रक्षा हो रही है और वायरस को रोका जा रहा है।
- लोगों ने लॉकडाउन का समर्थन तब किया जब उन्हें इसकी आवश्यकता समझ में आई, न कि तब जब उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया।
- कुछ लोगों को यह पसंद नहीं आया कि बिना टीकाकरण वाले लोगों की सुरक्षा के लिए लॉकडाउन लगाया जाए।
- कुछ लोगों को जो परेशानी महसूस हुई उसके लिए उन्हें अधिक मानसिक स्वास्थ्य सहायता की आवश्यकता थी।
- अधिक वित्तीय सहायता और सेवाओं तक पहुंच की आवश्यकता थी।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- सरकारी लॉकडाउन नीतियों में विभिन्न प्रकार की जीवन स्थितियों पर विचार किया जाना चाहिए।
- लॉकडाउन के दौरान और उसके बाद अधिक और बेहतर सामाजिक सेवाएं, मानसिक स्वास्थ्य सहायता और वित्तीय सहायता।
- यह सुनिश्चित करना कि पुलिस को लॉकडाउन नियमों की जानकारी दूसरों से पहले हो (ताकि उन्हें एक प्राधिकरण के रूप में देखा जाए) और यह सुनिश्चित करना कि सामुदायिक अधिकारियों को लॉकडाउन नियमों की अच्छी जानकारी हो ताकि वे लोगों को उनका पालन करने में सफलतापूर्वक मदद कर सकें।
- यह सुनिश्चित करना कि निर्णय लेने की जानकारी देने और उपचार तथा सामाजिक एकजुटता में मदद करने के लिए अलग-अलग आवाजें सुनी जाएं।

विकलांग समुदाय, उनके परिवार (whānau) और देखभालकर्ताओं के दृष्टिकोण

जांच दल ने ऑकलैंड काउंसिल विकलांगता सलाहकार समूह, डिसेबिलिटी कनेक्ट, कॉम्प्लेक्स केयर ग्रुप, कैकरंगा और ते रूपु वैओरा से भी जानकारी ली।

ऑकलैंड काउंसिल विकलांगता सलाहकार समूह अपने अनुभव का उपयोग विकलांग समुदाय के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों की पहचान करने और काउंसिल को सलाह देने के लिए करता है। उनके सह-अध्यक्ष ने जांच दल के साथ अपने अनुभव साझा किए।

डिसेबिलिटी कनेक्ट विकलांग लोगों या विकलांग लोगों के परिवार के सदस्यों को न्यूजीलैंड के विकलांगता क्षेत्र में मार्गदर्शन करने में मदद करता है।

कॉम्प्लेक्स केयर ग्रुप बहुत उच्च और जटिल आवश्यकताओं वाले लोगों के देखभालकर्ताओं के लिए एक सहायता और सूचना नेटवर्क है।

कैकरंगा विकलांग लोगों और उनके परिवारों के साथ मिलकर काम करता है ताकि उन्हें सहायता मिल सके और वे अपना जीवन उस तरह जी सकें जैसा वे जीना चाहते हैं।

ते रूपु वैओरा एक कौपापा माओरी संगठन है, जिसकी स्थापना और संचालन शारीरिक, संवेदी और बौद्धिक विकलांगता वाले परिवारों द्वारा किया जाता है, जो अपने समुदायों को सूचना, सलाह और सहायता प्रदान करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- विकलांग समुदायों के लिए उपलब्ध सहायता और सूचना में महत्वपूर्ण अंतराल थे। इसके कुछ उदाहरणों में राहत देखभाल तक पहुंच और विकलांग शिक्षार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाली शिक्षा तक पहुंच शामिल है।
- विकलांग लोगों को समाधानों में सुधार करना पड़ा (जैसे PPE के लिए डिशवॉशिंग दस्ताने का उपयोग करना)।
- सरकार की ओर से संचार उचित नहीं था, जिसमें 'बबल' जैसे नए शब्दों का उपयोग किया गया था – जिसका उपयोग पहली बार उस समूह का वर्णन करने के लिए किया गया था जिसके साथ आप लॉकडाउन के दौरान अलग-थलग थे – जिससे चुनौतियां पैदा हुईं और सुलभ प्रारूपों में जानकारी की कमी हो गई।
- वाइकाहा माओरी (जो माओरी और विकलांग हैं) अक्सर सेवाओं से वंचित रह जाते हैं, क्योंकि माओरी के लिए सेवाएं विकलांग उपयोगकर्ताओं के लिए उपयुक्त नहीं थीं और विकलांग लोगों के लिए सेवाएं माओरी के लिए उपयुक्त नहीं थीं।
- उनका मानना था कि सरकारी एजेंसियां एक-दूसरे से तब बात नहीं करतीं जब उन्हें बात करनी चाहिए।
- बधिर होंठ पाठकों के लिए मास्क एक वास्तविक संचार चुनौती थी।
- देखभाल करने वालों को 'बबल्स' में फंसने पर थकान का अनुभव हुआ और संक्रमण के खतरे के कारण जब स्टाफ को बदलना पड़ा तो ग्राहक चिंतित हो गए। अक्सर उपयुक्त देखभाल कर्मचारियों की कमी होती थी, जिसका अर्थ था कि परिवार और सामुदायिक समूहों को इस कमी को पूरा करना पड़ता था।
- विकलांग समुदायों में भय और चिंता का स्तर बहुत अधिक था।
- टीकाकरण के बारे में विचार मिश्रित थे – कुछ लोग चिंतित थे कि टीकाकरण से उनकी स्थिति और खराब हो जाएगी, जबकि अन्य लोग सुरक्षा के लिए उत्सुक थे क्योंकि उनकी प्रतिरक्षा प्रणाली कमजोर थी।
- महामारी के तनाव से परिवारों पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ा है – जैसे कि मानसिक स्वास्थ्य खराब होना।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- विकलांग समुदायों को योजना बनाने और निर्णय लेने में सक्रिय रूप से शामिल करना, न कि उन्हें एक समस्या की तरह समझना, जिसका समाधान किया जाना है।
- यह सुनिश्चित करना कि विकलांग समुदायों तक जानकारी आसानी से समझ में आने वाले और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त तरीकों से पहुंचाई जाए।
- माओरी विकलांग समुदाय के लिए विशेष रूप से एक रणनीति विकसित करना

जनरल प्रैक्टिस क्षेत्र के दृष्टिकोण

जांच दल ने जनरल प्रैक्टिस न्यूज़ीलैंड, जनरल प्रैक्टिस ओनर्स एसोसिएशन और हाउओरा ताइवेनुआ ग्रामीण स्वास्थ्य नेटवर्क से विचार सुने।

जनरल प्रैक्टिस न्यूज़ीलैंड एक राष्ट्रीय सदस्यता संगठन है जो प्राथमिक देखभाल के लिए नेतृत्व, वकालत और आवाज प्रदान करता है।

जनरल प्रैक्टिस ओनर्स एसोसिएशन, जनरल प्रैक्टिस मालिकों का प्रतिनिधित्व करता है तथा सरकार के समक्ष उनके सदस्यों के लिए वकालत करता है।

हाउओरा ताइवेनुआ ग्रामीण स्वास्थ्य नेटवर्क एक सामूहिक संगठन है जो ग्रामीण न्यूज़ीलैंडवासियों के स्वास्थ्य और कल्याण की वकालत करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- प्रारंभिक लॉकडाउन उपयुक्त थे, और सामान्य चिकित्सक देखभाल प्रदान करने के लिए तेजी से समायोजन करने में सक्षम थे। इसके बावजूद, वे स्क्रीनिंग जैसी नियमित देखभाल में पीछे रह गए।
- सामान्य चिकित्सकों से अपेक्षा की जाती है कि वे समुदाय को कोविड-19 टीकाकरण प्रदान करने में अधिक शामिल हों, क्योंकि अन्य सभी टीकाकरणों में उनकी भूमिका होती है।
- सामान्य चिकित्सकों ने गलत सूचना से निपटने में बहुत समय लगाया है और वे अभी भी इसका प्रभाव देख रहे हैं। उदाहरण के लिए, अब कम बच्चों को टीका लगाया जा रहा है।
- टीकाकरण संबंधी अनिवार्यताओं को लागू करना कठिन था, लेकिन सामान्य चिकित्सकों (GP) ने आम तौर पर उन का समर्थन किया, क्योंकि उन्हें लगा कि वे समग्र रूप से समुदाय के लिए अच्छे हैं।
- सामान्य चिकित्सकों (GP) को कई प्रकार के प्रभाव देखने को मिल रहे हैं, उदाहरण के लिए, लंबे समय तक कोविड रहना, चिंता की दर में वृद्धि और वित्तीय असुरक्षा।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- सरकार को टीकाकरण प्रदान करने में सामान्य चिकित्सकों की भूमिका को बेहतर ढंग से समझना चाहिए।
- सोशल मीडिया पर गलत सूचनाओं को अधिक गंभीरता से लेना तथा गलत सूचनाओं से लड़ने के लिए संसाधन उपलब्ध कराना।
- लोगों को टीकों के प्रति सहज महसूस कराने में मदद करने के लिए कुछ स्वास्थ्य प्रदाताओं या इवी जैसी विश्वसनीय आवाज़ों का उपयोग करना।
- टीकाकरण अनिवार्यताओं के डिजाइन के बारे में बहुत सावधानी से सोचना और भविष्य में उन्हें और अधिक विशिष्ट बनाना।

वृद्ध लोगों के दृष्टिकोण

जांच दल ने हे मनाकितांगा कौमाटुआ एओटेरोआ - ऐज कंसर्न न्यूज़ीलैंड और ग्रे पावर न्यूज़ीलैंड फेडरेशन से विचार सुने।

हे मनाकितांगा कौमाटुआ एओटेरोआ – ऐज कंसर्न न्यूज़ीलैंड 65 वर्ष से अधिक आयु के लोगों और उनके मित्रों तथा उनके परिवार (whānau) के लिए एक चैरिटी है। वे वृद्ध लोगों के लिए विशेषज्ञ जानकारी और सेवाएं प्रदान करते हैं।

ग्रे पावर न्यूज़ीलैंड फेडरेशन वृद्ध लोगों के कल्याण और भलाई को बढ़ावा देता है, उनका समर्थन करता है और उनकी सुरक्षा करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- कई वृद्ध लोग कोविड-19 से डरे हुए थे, लेकिन उन्होंने ऑनलाइन शॉपिंग या पड़ोस के बच्चों को दिखाने के लिए खिड़कियों में टेडी बियर लगाने जैसे नए अवसरों को भी जल्दी से अपना लिया।
- पोलियो या अन्य बीमारियों के पिछले अनुभवों के कारण अधिकांश वृद्ध लोग नियमों का बहुत सावधानी से पालन करते थे।
- डिजिटल माध्यम से कनेक्ट न होने वाले वृद्ध लोगों के लिए सेवाओं तक पहुंच पाना या वैक्सीन पास जैसी आवश्यकताओं का पालन करना कठिन था।
- अकेले रहने वाले वृद्ध लोगों के लिए लॉकडाउन कठिन था और दूसरा लॉकडाउन उनके लिए विशेष रूप से कठिन था।
- टीकाकरण अनिवार्यता के कारण ऐज कंसर्न ने कई स्वयंसेवकों को खो दिया।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- मौजूदा डिजिटल विभाजन के प्रति सचेत रहना, जो संकट के दौरान और भी बदतर हो जाता है।
- मौजूदा संगठनों का उपयोग करना और उन्हें महामारी में अपने समुदायों का समर्थन करने के लिए आवश्यक धन उपलब्ध कराना।
- वृद्ध लोगों के डर को शांत करने में मदद के लिए निःशुल्क रैपिड एंटीजन टेस्ट (RATs) उपलब्ध कराना।

प्रशांत समुदाय के दृष्टिकोण

जांच दल ने पासीफिका फ्यूचर्स (Pasifika Futures) के विचार सुने।

पासीफिका फ्यूचर्स स्वास्थ्य, आवास, शिक्षा, प्रशिक्षण और आर्थिक विकास के क्षेत्रों में प्रशांत परिवारों को सहायता प्रदान करने के लिए देश भर के प्रदाताओं के साथ काम करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- पासीफिका फ्यूचर्स ने कोविड-19 के प्रति सरकार की प्रतिक्रिया में सहायता के लिए अपने मौजूदा सिस्टम और डेटा का उपयोग किया।
- प्रशांत क्षेत्र के छात्रों की शिक्षा पर लॉकडाउन का बड़ा प्रभाव पड़ा, और इसे संबोधित करने के लिए कोई सरकारी कार्रवाई नहीं की गई है। प्रशांत क्षेत्र के छात्रों के पास प्रायः उपकरणों तक पहुंच नहीं होती थी, इसलिए वे दूरस्थ रूप से शिक्षा प्राप्त नहीं कर सकते थे। उनके दीर्घकालिक जीवन और शिक्षा के अवसर प्रभावित हुए हैं।
- प्रशांत क्षेत्र के समुदायों को भोजन, किराये के पैसे, लाभ प्रणाली, बच्चों की देखभाल और पालतू जानवरों की देखभाल में मदद की आवश्यकता थी।

- प्रशांत क्षेत्र के समुदाय आमतौर पर सरकारी नियमों का पालन करते थे, जिसमें टीकाकरण संबंधी अनिवार्यताएं भी शामिल थीं।
- कई अन्य समूहों की तुलना में प्रशांत क्षेत्र के समुदाय कोविड-19 से अधिक बार बीमार हुए। इसका आंशिक कारण इन समुदायों में विद्यमान सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ थीं।
- प्रशांत क्षेत्र के परिवारों को नस्लवाद, उंगली उठाने और कलंक का सामना करना पड़ा, जिससे उनके मानसिक स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ा और परिवारों को सहायता मांगने में डर लगने लगा।
- हेल्थलाइन पर पैसिफ़िक भाषा बोलने वाले ज़्यादा नहीं थे, जिससे प्रशांत समुदाय के उन सदस्यों के लिए संचार कठिन हो गया जो अच्छी तरह से अंग्रेजी नहीं बोलते थे और सरकारी प्रणालियों से परिचित नहीं थे।
- उन्होंने महसूस किया कि सीमा, अस्पतालों और क्वारंटीन होटलों में प्रशांत क्षेत्र के लोगों के काम को मान्यता और सराहना नहीं मिली।
- उन्हें प्रशांत समुदाय प्रदाता की प्रतिक्रिया पर गर्व था।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- प्रशांत क्षेत्र के समुदायों के सामने मौजूद सामाजिक, आर्थिक, शिक्षा और स्वास्थ्य चुनौतियों का समाधान करना।
- महामारी से सुरक्षित रहने और प्रशांत समुदायों को सांस्कृतिक रूप से उचित और स्थानीय समाधान प्रदान करने के बारे में संदेश साझा करने के लिए विश्वसनीय प्रशांत नेताओं का उपयोग करना।
- सीमाओं, अस्पतालों और होटलों में प्रशांत क्षेत्र के आवश्यक कर्मचारियों का समर्थन करना।

सार्वजनिक सुनवाई: तीसरा दिन

ऑकलैंड समुदायों के दृष्टिकोण

जांच दल ने CNSST फाउंडेशन, फलेलालागा विलेज लिमिटेड और मंगेरे ईस्ट में समोआ के कांग्रेगेशनल क्रिश्चियन चर्च के विचार सुने।

CNSST फाउंडेशन एशियाई प्रवासियों और न्यूजीलैंड समुदायों को बसने, शिक्षा, आवास आदि के लिए सहायता और सेवाएं प्रदान करता है।

फलेलालागा लिमिटेड समोआई लोगों और उनके इतिहास, संस्कृति, विरासत और पहचान के बीच संबंधों का समर्थन करता है।

मंगेरे ईस्ट में समोआ का कांग्रेगेशनल क्रिश्चियन चर्च एक बड़ा चर्च मण्डली और सामुदायिक केंद्र है, जिसने कोविड-19 महामारी के दौरान समोआई और व्यापक प्रशांत समुदायों का समर्थन किया।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- प्रशांत क्षेत्र के समुदायों के लिए सूचना तक पहुंच एक मुद्दा था, गलत सूचना और अन्य भाषाओं में जानकारी की कमी इन दोनों कारणों से यह समस्या उत्पन्न हुई।
- प्रशांत क्षेत्र के समुदायों के लिए एकांतवास भी एक चुनौती थी, क्योंकि वे अपने समुदायों और परिवारों से अलग रहने के आदी नहीं थे।

- प्रशांत और एशियाई दोनों समुदायों ने सरकारी सहायता की प्रतीक्षा करने के बजाय अपने स्वयं के संसाधन बनाने और महामारी से निपटने के लिए मिलकर काम किया।
- कुछ संदेहों के बावजूद, प्रशांत और एशियाई दोनों समुदायों ने ज्यादातर टीकाकरण के संबंध में सरकारी नियमों का पालन करना चुना। कुछ लोगों का मानना था कि टीकाकरण के बदले में भोजन के पैकेट देना रिश्वत है और यह अशोभनीय है।
- निम्न आय वाले परिवारों के बच्चों के लिए स्कूल में बने रहना कठिन था, क्योंकि वे ऑनलाइन पढ़ाई के लिए इंटरनेट या आवश्यक उपकरणों तक पहुंच नहीं पाते थे।
- उन्हें आमतौर पर ऐसा महसूस हुआ कि उन्होंने 2020 में जो कुछ हुआ उससे सबक लिया है और वे 2021 में महामारी का सामना करने के लिए अधिक तैयार थे।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- यह सुनिश्चित करना कि सरकारी संचार सभी समुदायों के लिए सुलभ हो और समुदाय महामारी का सामना करने के लिए आवश्यक परिवर्तनों के लिए तैयार हों।
- महामारी के कारण शिक्षा में होने वाले व्यवधानों के लिए योजना बनाना, जिसमें शिक्षकों को सहायता प्रदान करना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि बच्चों के पास उपकरणों और इंटरनेट तक पहुंच हो।
- यह विचार करना कि महामारी के प्रति प्रतिक्रिया करते समय महामारी संबंधी नियम लोगों के सामाजिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करते हैं।
- लोगों को टीका लगवाने के लिए पुरस्कार देने के बजाय, सरकार को लोगों को टीकों के बारे में जानने में मदद करनी चाहिए तथा सूचित विकल्प बनाने के लिए उनके समुदाय के नेताओं के साथ मिलकर काम करना चाहिए।

ते कौनिहेरा ओ तामाकी मकौराऊ – ऑकलैंड काउंसिल के दृष्टिकोण

जांच दल ने ते कौनिहेरा ओ तामाकी मकौराऊ – ऑकलैंड काउंसिल के विचार सुने।

ते कौनिहेरा ओ तामाकी मकौराऊ – ऑकलैंड काउंसिल तामाकी मकौराऊ ऑकलैंड क्षेत्र के लिए स्थानीय सरकार परिषद है। वे ऑकलैंड क्षेत्र में सार्वजनिक सेवाएं प्रदान करने के लिए जिम्मेदार हैं।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- विभिन्न समुदायों के साथ संवाद करने के लिए कई अलग-अलग चैनलों का उपयोग करना महत्वपूर्ण था।
- महामारी के दीर्घकालिक सामाजिक और आर्थिक प्रभाव 'नई सामान्य' स्थिति बन गए हैं।
- सरकारी सहायता मिलने तक उन्हें बहुत सी सहायता संबंधी कमियों को पूरा करना था और यह चुनौतीपूर्ण था।
- जैसे-जैसे लॉकडाउन जारी रहा, कई नई चुनौतियाँ सामने आईं। इन चुनौतियों में अधिक लोगों को आवश्यक कर्मचारी बनाने की आवश्यकता शामिल थी, क्योंकि अधिक कार्य आवश्यक हो गए थे, जैसे कि लंबे लॉकडाउन के बाद जिन मशीनों को रखरखाव की आवश्यकता थी, जिन्हें छोटे लॉकडाउन के बाद रखरखाव की आवश्यकता नहीं थी, या उन माता-पिता के साथ काम करना जिनके बच्चे खेल के मैदान जैसे सामुदायिक क्षेत्रों तक पहुंच के बिना संघर्ष कर रहे थे।

- सरकारी नियमों को लागू करने के लिए कर्मचारियों को काफी दुर्व्यवहार का सामना करना पड़ा। परिषद के कर्मचारियों को भी उन लोगों को सुविधाओं से बाहर रखने में कठिनाई हुई, जिनका टीकाकरण नहीं हुआ था, हालांकि उन्होंने सभी को शामिल करने के तरीके खोजने की कोशिश की।
- कुछ सामुदायिक संबंध, जैसे कि परिषद और माओरी तथा प्रशांत समुदायों के बीच संबंध, महामारी के दौरान एक साथ काम करने के बाद और मजबूत हो गए।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- अच्छे सामुदायिक संबंधों का निर्माण और रखरखाव करना।
- यह सुनिश्चित करना कि नियोजन दृष्टिकोण इस बात पर विचार करें कि जब लॉकडाउन लंबे समय तक जारी रहे तो क्या करना है।
- महामारी से संबंधित कानून में स्थानीय सरकार को बड़ी भूमिका देने पर विचार किया जा रहा है।

माओरी स्वास्थ्य और सामाजिक सेवा प्रदाताओं के दृष्टिकोण

जांच दल ने ते व्हानाउ ओ वाइपैरिरा और तामाकी की ते टोंगा जिला माओरी परिषद के विचार सुने।

ते व्हानाउ ओ वाइपैरिरा पश्चिमी ऑकलैंड में सभी आयु वर्ग के लोगों के लिए स्वास्थ्य, कानूनी, आवास और शिक्षा सेवाएं और सहायता प्रदान करता है।

तामाकी की ते टोंगा जिला माओरी परिषद दक्षिण ऑकलैंड के लिए न्यूजीलैंड माओरी परिषद की जिला परिषद है। परिषद माओरी समुदाय विकास और सरकारी नीति विकास का समर्थन करती है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- लॉकडाउन ने माओरी लोगों के लिए सरकार के प्रति मौजूदा अविश्वास को और बदतर बना दिया, जिससे सहायता में समस्या उत्पन्न हुई और माओरी लोगों के लिए अस्पताल में भर्ती होने की संख्या बढ़ गई। माओरी परिवार के समर्थन के लिए धन पर्याप्त नहीं था।

- लॉकडाउन के कारण पारिवारिक हिंसा की स्थिति में सुरक्षा संबंधी समस्याएं उत्पन्न हुईं तथा लोगों को महत्वपूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं नहीं मिल सकीं, जिसके कारण निदान और देखभाल में देरी हुई।

- प्रौद्योगिकी और डिजिटल कौशल की कमी के कारण कई माओरी परिवारों के लिए अदालत और सामाजिक कार्य को ऑनलाइन करना कठिन था।

- टीकाकरण नियमों को माओरी आत्मनिर्णय के विरुद्ध माना गया और इसके कारण माओरी श्रमिकों की संख्या में कमी आई। सख्त नियमों के कारण प्रदाताओं के बीच विरोध और प्रतिस्पर्धा भी पैदा हो गई।

- आयु-आधारित टीकाकरण से माओरी समुदाय को नुकसान हुआ, क्योंकि वे उच्च स्वास्थ्य आवश्यकताओं वाला एक युवा समूह हैं। अधिदेश के बारे में पर्याप्त शिक्षा का अभाव तथा कुछ सामुदायिक नेताओं से समर्थन की कमी ने चीजों को और कठिन बना दिया।

- लॉकडाउन के संबंध में सर्वोत्तम प्रतिक्रियाएं स्थानीय सरकार के साथ मजबूत साझेदारी और माओरी परिवारों पर केंद्रित, समुदाय-नेतृत्व वाले तथा सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त समाधान तैयार करने से आईं। भविष्य के विशेषज्ञ समूहों में माओरी के साथ वास्तविक चर्चा और मौजूदा सामुदायिक सहायता प्रणालियों को मजबूत करने की स्पष्ट आवश्यकता है।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- भावी महामारी योजनाओं में समुदायों को शामिल करना, मुख्य रूप से स्वदेशी और कमजोर समूहों को शामिल करना, ताकि प्रभावी और विश्वसनीय समाधान तैयार किए जा सकें।
- इंटरनेट पहुंच, उपकरण और डिजिटल साक्षरता सहायता प्रदान करके दूरस्थ सेवाएं प्रदान करते समय डिजिटल असमानता को संबोधित करना।
- टीकाकरण अभियान को निष्पक्ष और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त तरीके से डिजाइन करना, उच्च-आवश्यकता वाले समुदायों को प्राथमिकता देना और विश्वसनीय नेताओं के साथ काम करना।
- पारिवारिक क्षति में वृद्धि जैसे जोखिमों की योजना बनाकर और चल रही स्वास्थ्य सेवाओं को सुनिश्चित करके महामारी के दौरान कमजोर परिवारों की रक्षा करना।

शिक्षा क्षेत्र के दृष्टिकोण

जांच दल ने नगा तुमुआकी ओ एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड प्रिंसिपल्स फेडरेशन और काइतिया कॉलेज के विचार सुने।

नगा तुमुआकी ओ एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड प्रिंसिपल्स फेडरेशन एओटेरोआ न्यूजीलैंड में 2,000 से अधिक स्कूल प्रिंसिपलों के लिए समर्थन और एक पेशेवर आवाज प्रदान करता है।

काइतिया कॉलेज काइतिया, ते ताई टोकेरौ नॉर्थलैंड में स्थित एक माध्यमिक विद्यालय है, जिसमें केवल 1,000 से कम छात्र हैं। काइतिया व्यापक नॉर्थलैंड क्षेत्र के साथ-साथ विस्तारित लॉकडाउन प्रतिबंधों के अधीन था।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- कई छात्रों, विशेष रूप से ग्रामीण और कम आय वाले क्षेत्रों में, के पास कंप्यूटर और विश्वसनीय इंटरनेट की सुविधा का अभाव है, जिसके कारण स्कूलों को अभिभावकों के फोन और सोशल मीडिया पर निर्भर रहना पड़ता है। स्कूलों को भी लॉकडाउन के दौरान कुछ छात्रों से संपर्क करने में कठिनाई हुई।
- सीखने की कठिनाइयों, विकलांगताओं या न्यूरोडाइवर्जेंस वाले छात्रों को सबसे अधिक नुकसान उठाना पड़ा। विशेषज्ञ शिक्षकों से विशिष्ट समर्थन और व्यक्तिगत सहायता की कमी के कारण वे अक्सर स्कूल से विमुख हो जाते हैं।
- शिक्षकों को ऑनलाइन शिक्षण के साथ पारिवारिक जरूरतों को संतुलित करने में भारी तनाव का सामना करना पड़ा, जिससे बड़े पैमाने पर थकान हुई। यह तनाव समय के साथ और भी बदतर होता गया।
- प्रिंसिपल्स फेडरेशन ने टीकाकरण अनिवार्यता का समर्थन किया क्योंकि शिक्षक युवाओं को शिक्षित कर रहे थे और उन्हें सुरक्षित रखना चाहते थे। हालाँकि, टीकाकरण संबंधी अनिवार्यताओं के कारण कर्मचारियों में विभाजन हो गया और अनुभवी शिक्षकों को यह पेशा छोड़ना पड़ा। अभी भी कुछ उपचार की आवश्यकता है।
- लॉकडाउन समाप्त होने के बाद भी माता-पिता अपने बच्चों को स्कूल भेजने से डर रहे थे।

- लॉकडाउन के दौरान प्रधानाचार्य महत्वपूर्ण सामुदायिक नेता बन गए, तथा उन्होंने कल्याण और संचार में अंतराल को भर दिया। स्कूलों ने नॉर्थलैंड समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों से निपटने में मदद के लिए व्यापक सामुदायिक सहायता प्रदान की। लॉकडाउन के कारण और बहुत दूर-दराज के समुदायों जैसे नॉर्थलैंड निवासियों द्वारा सामना की जाने वाली चुनौतियों के कारण, लोगों को समर्थन प्रदान करने के लिए बहुत काम और रचनात्मकता की आवश्यकता पड़ी।
- वे 2025 में भी छात्रों को सीखने की कमी और मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों से जूझते हुए देख रहे हैं।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्रों, विशेष रूप से वंचित क्षेत्रों में रहने वाले छात्रों के पास पहले से ही इंटरनेट और उपकरणों तक अच्छी पहुंच हो।
- यह सुनिश्चित करना कि विशेष आवश्यकता वाले छात्रों को सीखने के लिए आवश्यक सहायता मिले।
- स्कूल प्रधानाचार्यों को महामारी नियोजन में शामिल करना क्योंकि वे स्कूलों और व्यापक समुदायों दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। गलत सूचना और भ्रामक सूचनाओं को रोकना।
- यह सुनिश्चित करना कि सरकार का मार्गदर्शन स्पष्ट हो और किसी संकट के दौरान उसे क्रियान्वित करना आसान हो।
- उस अधिदेश में कर्मचारियों की भलाई और कार्यस्थल में सर्वोत्तम तरीके से एकता कैसे बनाए रखी जाए, इस पर विचार किया जाना चाहिए।

युवा लोगों के दृष्टिकोण

जांच दल ने ते ताई टोकेरौ नॉर्थलैंड और तामाकी मकौरौ ऑकलैंड में अपने समुदायों में सक्रिय युवाओं से बातचीत सुनी।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- लॉकडाउन आवश्यक थे, लेकिन वे युवाओं के लिए बहुत कठिन थे। उन्होंने सामाजिक सम्पर्क और शिक्षा तक पहुंच खो दी।
- जैसे-जैसे महामारी बढ़ती गई, लोग महामारी से संबंधित आवश्यकताओं को लेकर अधिक परेशान होते गए, विशेष रूप से मास्क पहनने और टीके लगवाने के संबंध में।
- महामारी के दौरान युवाओं ने न्यूज़ीलैंड में विभाजन देखा। एक गवाह ने बताया कि उसे आतिथ्य सत्कार के दौरान वैक्सीन पास और मास्क अनिवार्य करने के लिए शत्रुतापूर्ण व्यवहार का सामना करना पड़ा। एक अन्य व्यक्ति ने टीकाकरण न कराने के कारण अपने साथ हुए बहिष्कार के बारे में बताया।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- यह सुनिश्चित करना कि महामारी का सामना करते समय शिक्षा और समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को अच्छी तरह से समझा जाए और उस पर विचार किया जाए।
- संकट के दौरान युवा लोगों के लिए बेहतर सहायता प्रणाली विकसित करना।
- विभिन्न समुदायों के साथ मिलकर उनके लिए उपयुक्त समाधान ढूंढना, क्योंकि सभी समुदायों की आवश्यकताएं एक जैसी नहीं होतीं।

सार्वजनिक सुनवाई: चौथा दिन

वकालत समूहों से टीका सुरक्षा पर दृष्टिकोण

जांच दल ने हेल्थ फोरम न्यूज़ीलैंड, वॉयस फॉर फ्रीडम और न्यूज़ीलैंड डॉक्टर्स स्पीकिंग आउट विद साइंस के प्रतिनिधियों को सुना।

हेल्थ फोरम न्यूज़ीलैंड एक जमीनी स्तर का स्वैच्छिक संगठन है जो उन न्यूज़ीलैंडवासियों को सहायता प्रदान करता है जिन्हें कोविड-19 वैक्सीन से जुड़ी चोटों का अनुभव है।

वॉयस फॉर फ्रीडम (VFF) एक जमीनी स्तर का संगठन है जो एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की महामारी प्रतिक्रिया के बारे में मुखर रहा है।

न्यूज़ीलैंड डॉक्टर्स स्पीकिंग आउट विद साइंस (NZDSOS) चिकित्सा पेशेवरों का एक समूह है, जो कोविड-19 के प्रति एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की प्रतिक्रिया के बारे में मुखर रहे हैं।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- बहुत से लोग इस बात को लेकर चिंतित थे कि फाइजर वैक्सीन कितनी जल्दी विकसित की गई, साथ ही वैक्सीन में इस्तेमाल की गई mRNA तकनीक भी।
- टीके के बारे में सरकार का संदेश दुष्प्रभावों के बारे में स्पष्ट नहीं था और इस कारण टीके के बारे में चिंतित किसी भी व्यक्ति को षड्यंत्र सिद्धांतवादी कहा जाने लगा।
- टीकाकरण से छूट पाना बहुत कठिन था, और कई लोग जिन्हें एलर्जी थी या पहली खुराक के बाद दुष्प्रभाव का अनुभव हुआ था, वे छूट प्राप्त करने में असमर्थ थे।
- महामारी से निपटने के प्रयासों के कारण सरकार और चिकित्सा प्रणालियों पर भरोसा खत्म हो गया है।
- महामारी से निपटने के लिए सरकार के निर्णयों में मानवाधिकारों का उल्लंघन किया गया तथा कोविड-19 से निपटने के लिए ये निर्णय आवश्यक नहीं थे।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- वैकल्पिक विचारों और मतों पर सेंसरशिप लगाने के बजाय उन पर विचार करना।
- टीके कितनी तेजी से विकसित होते हैं, इस बारे में चिंताओं का समाधान करना।
- वैकल्पिक उपचार विकल्पों तक पहुंच की अनुमति देना।

गलत सूचना और भ्रामक सूचना पर दृष्टिकोण

जांच दल ने फाइटिंग अगेंस्ट कांस्पिरेसी थ्योरीज़ (FACT) एओटेरोआ से सुनवाई की।

FACT Aotearoa कार्यकर्ताओं का एक स्वयंसेवी समूह है जो एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में षड्यंत्र के सिद्धांतों और गलत सूचनाओं के विरुद्ध लड़ रहा है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- FACT Aotearoa ने महामारी के दौरान विरोध प्रदर्शन का सामना कर रहे MIQ (quarantine) कार्यकर्ताओं का समर्थन करने, ऑनलाइन जानकारी साझा करने और लोगों को गलत सूचना के खिलाफ लड़ने में मदद करने के लिए संसाधन प्रदान करने से लेकर कई प्रकार की सहायता प्रदान की।
- लोगों ने तब बेहतर प्रतिक्रिया व्यक्त की जब उन्हें गलत जानकारी पर विश्वास करने के लिए दोषी नहीं ठहराया गया।
- उन्होंने महसूस किया कि गलत सूचनाओं और षड्यंत्र के सिद्धांतों से लड़ने में मदद करने में एक कमी थी जिसे पूरा किया जाना आवश्यक था।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- लोगों को गलत सूचना और भ्रामक सूचनाओं से निपटने के लिए संसाधन उपलब्ध कराना।
- यह सुनिश्चित करना कि गलत सूचना पर विश्वास करने वालों पर कोई निर्णय दिए बिना उसका समाधान किया जाए।
- अपने समुदायों तक सही जानकारी पहुंचाने के लिए सामुदायिक समूहों और विश्वसनीय स्रोतों के साथ काम करना।

टीका विज्ञान अनुसंधान पर दृष्टिकोण

जांच दल ने मलाघन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्च और वैक्सीन एलायंस एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड – ओहु कौपारे हुआकेटो (VAANZ) के पूर्व निदेशक प्रोफेसर ग्राहम ले ग्रोस से बात की।

मालाघन इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल रिसर्च एक शोध संस्था है जो जैवचिकित्सा विज्ञान, विशेष रूप से कैंसर और संक्रामक रोगों पर ध्यान केंद्रित करती है।

VAANZ मालाघन इंस्टीट्यूट, ते हेरेंगा वाका – विक्टोरिया यूनिवर्सिटी ऑफ वेलिंगटन, और ओटाकौ व्काइहु वाका – यूनिवर्सिटी ऑफ ओटागो के बीच एक सहयोग है। इसकी स्थापना 2020 में एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की अपनी स्वयं की कोविड-19 वैक्सीन बनाने की क्षमता पर शोध करने के लिए की गई थी।

प्रोफेसर ले ग्रोस ने जांच दल को बताया:

- कोविड-19 वैक्सीन का तेजी से विकास, इसके लिए लगाए गए प्रचुर संसाधनों का परिणाम था, तथा क्योंकि क्लिनिकल ट्रायल एक के बाद एक करने के बजाय एक ही समय पर चलाए गए थे। क्लिनिकल ट्रायल में हजारों लोग शामिल थे और ये परीक्षण सुरक्षित रूप से किये गये। कोविड-19 का कारण बनने वाले वायरस पर शोध से भी टीके के विकास में मदद मिली, साथ ही टीके में प्रयुक्त mRNA तकनीक पर भी शोध किया गया।
- टीके के दुष्प्रभाव होते हैं, लेकिन वे बहुत दुर्लभ हैं। हम अभी तक इस बारे में ज्यादा नहीं जानते हैं कि कोविड-19 से संक्रमित होने के दीर्घकालिक परिणाम क्या हो सकते हैं, लेकिन हम जानते हैं कि कोविड-19 का टीका बहुत सुरक्षित है।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- उचित वैज्ञानिक कठोरता सुनिश्चित करते हुए खुली वैज्ञानिक बहस को बनाए रखना।
- दुर्लभ प्रतिकूल प्रतिक्रियाओं के लिए प्रणालियों की निगरानी जारी रखना।

- यह सुनिश्चित करना कि संवेदनशील प्रतिरक्षा प्रणाली वाले लोग टीकाकरण से पहले डॉक्टरों से परामर्श लें।
- निर्णय को व्यापक वैज्ञानिक साक्ष्य के आधार पर लिया जाना चाहिए न कि केवल तथ्यों पर आधारित होना चाहिए।

सार्वजनिक सुनवाई: पाँचवाँ दिन

अधिदेशित उद्योगों के दृष्टिकोण

जांच दल ने पोर्ट कंपनीज सीईओ ग्रुप, हाटो होन सेंट जॉन, ऑटिज्म न्यूज़ीलैंड और हॉस्पिटैलिटी न्यूज़ीलैंड से बात की।

पोर्ट कंपनीज सीईओ ग्रुप उन कंपनियों के नेताओं से बना है जो एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड की आपूर्ति श्रृंखला में आवश्यक बुनियादी ढांचा प्रदान करते हैं।

हाटो होन – सेंट जॉन एक धर्मार्थ संगठन है जो चिकित्सा प्रतिक्रियाओं के अग्रिम मोर्चे पर है – जो पूरे एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में एम्बुलेंस और अन्य स्वास्थ्य संबंधी सेवाएं प्रदान करता है।

ऑटिज़्म न्यूज़ीलैंड ऑटिस्टिक लोगों, उनके परिवारों/व्हानाउ, देखभाल करने वालों और उनके साथ काम करने वाले पेशेवरों के लिए एक सहायता सेवा, शिक्षा और सूचना प्रदाता है।

हॉस्पिटैलिटी न्यूज़ीलैंड एक स्वैच्छिक व्यापार संघ है जो 2,500 आतिथ्य और वाणिज्यिक आवास व्यवसायों का प्रतिनिधित्व करता है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- विकलांग समुदायों के लिए अतिरिक्त योजना की आवश्यकता थी, क्योंकि उनकी कई सेवाएँ दूर से प्रदान नहीं की जा सकती थीं। महामारी के कारण दिनचर्या में उत्पन्न व्यवधान ऑटिस्टिक लोगों और उनके परिवारों के लिए अविश्वसनीय रूप से तनावपूर्ण था।
- यद्यपि आवश्यक कर्मचारियों पर नौकरी छूटने जैसे महामारी के प्रभावों का कम प्रभाव पड़ा, फिर भी उनके परिवारों और समुदायों को उन प्रभावों का अनुभव हुआ। लोगों को स्वस्थ और सुरक्षित रखने के लिए स्पष्ट संचार और आश्वासन महत्वपूर्ण थे।
- बंदरगाहों ने कहा कि उन्हें चुनौतियों का सामना करना पड़ा क्योंकि स्वास्थ्य मंत्रालय यह नहीं समझ पाया कि बंदरगाह कैसे काम करते हैं। उन्हें चुनौतियों का भी सामना करना पड़ा क्योंकि वे बहुत से विशिष्ट कर्मचारियों को काम पर रखते हैं जिन्हें अगर वे कोविड-19 से बीमार हो जाते तो आसानी से बदला नहीं जा सकता था।
- सेंट जॉन इतनी सफलतापूर्वक प्रतिक्रिया देने में सक्षम थे, क्योंकि उनके पास पहले से ही बहुत सारी प्रणालियां मौजूद थीं। वे विदेशों में अपने सहकर्मियों से भी सीखने में सक्षम थे। उन्होंने कहा कि उनकी सबसे बड़ी चुनौती यह है कि उन्हें अस्पतालों जितने संसाधन नहीं मिल पा रहे हैं।
- पहले लॉकडाउन के बाद, कई लोगों ने लॉकडाउन से बाहर होने का जश्न मनाने के लिए अधिक पैसा खर्च किया। दूसरे लॉकडाउन के बाद ऐसा नहीं हुआ, जिसने आतिथ्य व्यवसायों के लिए जीवन कठिन बना दिया।

- रेस्तरां और कैफे जैसे छोटे व्यवसायों को अनिवार्य नियमों को समझने और उन्हें लागू करने में कठिनाई हुई। यह व्यवसायों के लिए बहुत तनावपूर्ण था। हॉस्पिटैलिटी न्यूज़ीलैंड को इन व्यवसायों को सरकारी नियमों का पालन करने में मदद करने के लिए बहुत अधिक सहायता प्रदान करनी पड़ी।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- सरकार को स्पष्ट दिशानिर्देश और समर्थन तैयार करने और स्थापित करने के लिए उद्योग निकायों के साथ काम करना चाहिए।
- यह सुनिश्चित करना कि न्यूजीलैंड के पास पर्याप्त मात्रा में PPE (व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण) स्टॉक (जैसे मास्क) है और इसे उन लोगों को वितरित करने के आसान तरीके हैं जिन्हें इसकी आवश्यकता है।
- यह सुनिश्चित करना कि महामारी की तैयारी और प्रतिक्रिया देने में संपूर्ण स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली को समान रूप से ध्यान में रखा जाए।
- महामारी से निपटने के लिए नियमित अभ्यास करना।
- महामारी के दौरान विकलांग समुदायों के लिए आवश्यक ऑनलाइन और व्यक्तिगत सहायता के लिए पहले से तैयारी करना।

नर्सिंग और मिडवाइफरी क्षेत्रों के दृष्टिकोण

जांच दल ने टोपुतांगा तापुही काइतियाकी ओ एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड नर्स संगठन और ते करेती ओ नगा कैवहाकव्हानौ कि एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड कॉलेज ऑफ मिडवाइव्स से बात की।

टोपुतांगा तापुही काइतियाकी ओ एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड नर्स संगठन एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में नर्सिंग के लिए संघ और पेशेवर निकाय है।

ते करेती ओ नगा कैवहाकव्हानौ कि एओटेरोआ – न्यूज़ीलैंड कॉलेज ऑफ मिडवाइव्स पेशेवर संगठन है और एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में दाइयों और छात्र दाइयों के लिए मान्यता प्राप्त 'आवाज़' है।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- नर्सों को यह सुनिश्चित करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा कि उनके परिवार को कोविड-19 न हो तथा स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र महामारी का सामना करने के लिए तैयार नहीं था। विदेशों में इतनी बड़ी संख्या में हो रही मौतों को देखकर उन्हें भी डर लग रहा था कि क्या होगा।
- नर्सें तनाव और उच्च कार्यभार से जूझ रही थीं, साथ ही उनके परिवार के सदस्य भी उनसे कोविड-19 की चपेट में आने से डर रहे थे।
- नर्सों का मानना था कि महामारी के बाद के दौर की तैयारी के लिए शांत अवधि के दौरान अधिक काम किया जा सकता था।
- नर्सों का मानना था कि सरकार ने निर्णय लेते समय उनके विचारों और अनुभवों पर विचार नहीं किया।
- महामारी से निपटने के दौरान सफाईकर्मियों, सुरक्षाकर्मियों और स्वास्थ्य देखभाल सुविधाओं में काम करने वाले लोगों को अक्सर भुला दिया गया।

- दाइयां, टीकाकरण का समर्थन कर रही थीं, लेकिन उन्हें अनिवार्यताओं के बारे में कुछ संदेह था, क्योंकि वे इस बात को लेकर चिंतित थीं कि गर्भवती महिलाओं को अच्छी देखभाल नहीं मिल पाएगी, क्योंकि उनके क्षेत्र की दाइयां टीकाकरण नहीं करवाना चाहती थीं। क्योंकि दाइयां ऐसी देखभाल प्रदान करती हैं जिसमें देरी नहीं की जा सकती, इसलिए उन्हें चिंता थी कि दाइयों की कमी, बिना टीकाकरण वाली दाइयों को मास्क और अन्य सुरक्षात्मक उपकरण पहनकर काम करने की अनुमति देने से कहीं अधिक खराब होगी।
- दाइयों ने आम तौर पर लॉकडाउन का समर्थन किया क्योंकि इससे दाइयों और उनके ग्राहकों को कोविड-19 से सुरक्षा मिली, जबकि उनका अधिकांश काम अभी भी व्यक्तिगत रूप से ही करना था।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- न्यूजीलैंड स्थित रोग नियंत्रण केंद्र की स्थापना।
- यह सुनिश्चित करना कि महामारी की योजना बनाते समय और उसका सामना करते समय माओरी और प्रशांत क्षेत्र की नर्सों को शामिल किया जाए तथा उन्हें अपने समुदायों में नेतृत्व करने के लिए समर्थन दिया जाए।
- स्वास्थ्य सेवा क्षेत्र को अधिक वित्त पोषण के साथ तैयार करना।
- कि, यदि जनादेश का उपयोग किया जाता है, तो बिना टीकाकरण वाले कर्मचारियों को काम पर लौटने में मदद करने के लिए अधिक तैयारी करें या लोगों को टीका लगवाने के बजाय सुरक्षात्मक गियर पहनने की अनुमति देने में अधिक लचीलापन रखें।
- माओरी प्रदाताओं सहित दाइयों के साथ जल्दी से जुड़ना।

अधिदेशों पर शोध के दृष्टिकोण

जांच दल ने ते व्हारे वानंगा ओ वेताहा – कैंटरबरी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर माइकल प्लैंक और ते वानंगा एरोनुई ओ तमाकी मकाउ राऊ – ऑकलैंड प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डेनिस विल्सन से भी बात की।

प्रोफेसर प्लैंक गणित और सांख्यिकी के शोधकर्ता हैं, जो जीव विज्ञान और महामारी विज्ञान (विभिन्न समूहों में कितनी बार रोग होते हैं और ऐसा क्यों होता है इसका अध्ययन) को समझने के लिए गणित का उपयोग करते हैं।

प्रोफेसर विल्सन ने स्वास्थ्य शोधकर्ता बनने से पहले एक नर्स के रूप में अपना करियर शुरू किया था, जहां उन्होंने माओरी के स्वास्थ्य और सामाजिक परिणामों पर ध्यान केंद्रित किया। अपने सहकर्मियों के साथ मिलकर उन्होंने स्वास्थ्य क्षेत्र पर अधिदेशों के प्रभाव पर शोध किया।

प्रोफेसर प्लैंक ने जांच दल को बताया:

- उनका काम मॉडलिंग में है, जो यह समझने में मदद करता है कि बीमारियां कैसे फैलती हैं और उनका क्या प्रभाव हो सकता है।
- जिन मॉडलों को विकसित करने में वह शामिल थे, उनसे सरकार को यह समझने में मदद मिली कि महामारी के प्रबंधन के लिए उन्होंने जो किया उसके आधार पर क्या हो सकता है।

- एक मॉडलिंग अध्ययन से पता चला कि टीकाकरण के बिना, 6,500 अधिक मौतें होतीं और 45,000 अधिक लोग अस्पताल में भर्ती होते। एक अन्य अध्ययन से पता चला है कि अतिरिक्त मौतें (मरने वाले लोगों की संख्या की तुलना में हम कितने लोगों के मरने की उम्मीद करते हैं) उस समय के दौरान बहुत कम थीं जब COVID-19 का प्रबंधन किया जा रहा था।

प्रोफेसर विल्सन ने जांच दल को बताया:

- अधिदेशों पर उनके शोध प्रोजेक्ट में लोगों से अधिदेशों के साथ उनके अनुभवों के बारे में साक्षात्कार करना शामिल था। कई लोग इसमें शामिल नहीं होना चाहते थे, क्योंकि उन्हें इस बात का डर था कि कहीं उन पर कोई आरोप न लग जाए या उन्हें और अधिक ठेस न पहुंचे, और जिन लोगों का साक्षात्कार लिया गया, वे बहुत भावुक थे।
- जिन लोगों का उन्होंने साक्षात्कार किया, उनमें से अधिकांश लोग टीकों को स्वीकार कर रहे थे, लेकिन अनिवार्य आदेशों से उन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा, आमतौर पर उनकी नौकरी चली गई या उन्हें 'एंटी-वैक्सर्स' (ऐसे लोग जो टीकों के सख्त खिलाफ देखे जाते हैं और जिनके पास इस दृष्टिकोण के लिए कोई अच्छा कारण नहीं है) के रूप में आंका गया और समाज से बहिष्कृत कर दिया गया।
- अधिकांश लोगों के पास टीका न लगवाने के स्पष्ट कारण थे, जैसे कि पहले किसी टीके से हुई बुरी प्रतिक्रिया।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

प्रोफेसर प्लैंक:

- मॉडलिंग में निवेश करना ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि हमें इस बात की जानकारी हो कि क्या हो सकता है, लेकिन यह भी सुनिश्चित करना कि लोगों को पता हो कि मॉडल क्या कर सकते हैं और क्या नहीं कर सकते हैं।
- यह सुनिश्चित करना कि टीके निष्पक्ष और न्यायसंगत आधार पर दिए जाएं।

प्रोफेसर विल्सन:

- अधिदेशों के प्रति अधिक दयालु और लचीला दृष्टिकोण अपनाना।
- इस बात पर विचार करना कि टीकाकरण न कराने वाले लोग अन्य क्षेत्रों में काम करने के लिए कैसे जा सकते हैं, तथा यह सुनिश्चित करना कि अनिवार्यता समाप्त होने के बाद उनके काम पर लौटने के लिए एक स्पष्ट योजना हो।

टीके के संबंध में संचार पर दृष्टिकोण

जांच दल ने वाइपापा ताउमाता राऊ – ऑकलैंड विश्वविद्यालय के एसोसिएट प्रोफेसर हेलेन पेटौसिस-हैरिस से बात की।

एसोसिएट प्रोफेसर पेटौसिस-हैरिस चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विज्ञान में शोधकर्ता हैं, जो टीकों में विशेषज्ञ हैं।

उन्होंने जांच दल को बताया:

- टीकाकरण एक बहुत ही कुशल सार्वजनिक स्वास्थ्य उपकरण है। यह लोगों और व्यापक समुदाय को बीमार होने से बचाता है। इससे अस्पताल में भर्ती होने वाले लोगों की संख्या भी कम हो जाती है, जिससे स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली काम करती रह सकती है।

- एओटेरोआ न्यूज़ीलैंड में कोविड-19 के कारण अन्य देशों की तुलना में बड़ी संख्या में मौतें और अन्य प्रभाव नहीं हुए। इसके बजाय, हमने महामारी के प्रति प्रतिक्रिया के नकारात्मक प्रभावों का अनुभव किया, जैसे कि लॉकडाउन के कारण नौकरियों का नुकसान।
- लोगों को यह जानने की जरूरत है कि टीका किस लिए है और इसके लाभ और जोखिम क्या हैं। ऐसा करना कठिन हो सकता है, क्योंकि जो संप्रेषित किया जाना है वह लगातार बदलता रहता है।
- सरकार को महामारी से पहले लोगों के साथ विश्वास बनाने की आवश्यकता थी, ताकि लोग टीकाकरण के लिए सरकार की सिफारिश के बाद आत्मविश्वास महसूस करें।

भविष्य की महामारियों की तैयारी के लिए, उन्होंने सिफारिश की:

- यह सुनिश्चित करना कि संकट आने से पहले लोग समझें कि टीके कैसे काम करते हैं, जिसमें विशेषज्ञों और माहिरों से जानकारी उपलब्ध कराना शामिल है।
- सभी के साथ अच्छे संचार चैनल बनाना और उन्हें हर समय खुला रखना।
- टीकाकरण में हिचकिचाहट को समझने और यह कहां से आती है, इस पर काम किया जा रहा है।
- हर प्रश्न का उत्तर देने वाला अच्छा संचार तैयार करना – यह महामारी प्रतिक्रिया में विश्वास बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

जांच दल के लिए आगे क्या है

जांच दल हमारे संदर्भ की शर्तों में निर्धारित विषयों की समीक्षा में मदद करने के लिए जानकारी एकत्र करना जारी रखेगी। यह जानकारी प्रमुख निर्णयकर्ताओं और सलाहकारों के साथ साक्षात्कार, सरकार और अन्य स्रोतों द्वारा प्रदान की गई लिखित जानकारी, और महामारी का अनुभव करने वाले समूहों और संगठनों के साथ बैठकों के माध्यम से एकत्र की जाएगी।

जांच दल के पास आवश्यक जानकारी एकत्र होने के बाद, हम अपनी रिपोर्ट लिखेंगे। यह रिपोर्ट विचारणीय विषयों को कवर करेगी तथा सरकार को भविष्य की महामारियों के लिए तैयारी करने के संबंध में सिफारिशें करेगी। जांच दल के पास प्राप्त सभी सूचनाओं पर हम अपनी रिपोर्ट लिखते समय विचार करेंगे।

रिपोर्ट को प्राकृतिक न्याय और तथ्य-जांच प्रक्रिया से भी गुजरना होगा। यह एक कानूनी प्रक्रिया है, जिसमें जांच दल द्वारा रिपोर्ट में किसी के बारे में प्रतिकूल निष्कर्ष (ऐसा निष्कर्ष जो उनके कार्यों या निर्णयों की आलोचना करता है) निकाला जाता है, तो उसे रिपोर्ट समाप्त होने से पहले उस निष्कर्ष को देखने और उस पर प्रतिक्रिया देने का अधिकार होता है।

रिपोर्ट 26 फरवरी 2026 तक पूरी करके गवर्नर-जनरल को सौंप दी जाएगी। इसके बाद यह सरकार पर निर्भर होगा कि वह रिपोर्ट को जनता के सामने जारी करे तथा जांच में की गई सिफारिशों पर कार्रवाई करे।